

**मुँड़िया** पुं. (तद्.) 1. सिर मुँड़ाकर बना हुआ साधु, संन्यासी 2. करघे का एक हत्था जिससे राछ चलाते हैं।

**मुँदना** अ.क्रि. (तद्.) (आँख) 1. बंद होना, अंत तक पहुँचना, समाप्त होना 2. छेद आदि का बंद होना।

**मुँदरज** वि. (अर.) 1. दर्ज, लिखित, प्रविष्ट, अंकित 2. अंतर्गत, सम्मिलित।

**मुँदरा** पुं. (तद्.) 1. कान में पहनने का एक प्रकार का आभूषण 2. वह कुंडल जो जोगी लोग कान में पहनते हैं।

**मुँदरी** स्त्री. (तद्.) अँगूठी, हाथ की उँगली में पहनने का आभूषण।

**मुँदा** पुं. (तद्.) दे. मुँदरा।

**मुँह** पुं. (तद्.) 1. प्राणियों की आँख और नासिका के नीचे स्थित वह छिद्र जिसमें आहारग्रहण और बोलने के अवयव होते हैं, मुख 2. छेद, सुराख 3. बरतन आदि का वह छेद जिससे कोई चीज अंदर डाली जाए 4. योग्यता, किनारा।

**मुँह-अँधेरे** क्रि.वि. (तद्.) बहुत सवेरे जैसे- वह मुँह-अँधेरे ही उठकर घर से निकल पड़ा।

**मुँह-अखरी** वि. (देश.) जबानी, शाब्दिक, मौखिक।

**मुँह-उजाले** क्रि.वि. (तद्.) बहुत सवेरे, तड़के।

**मुँह-उट्ठे** क्रि.वि. (देश.) ठीक उस समय जब कोई आदमी सुबह के समय सोकर उठा ही हो।

**मुँह-काला** पुं. (तद्.) 1. कोई निंदनीय कार्य करने पर होने वाली अप्रतिष्ठा या बदनामी 2. पर पुरुष या परस्त्री के साथ संभोग करने पर होने वाली बदनामी 3. एक प्रकार की गाली।

**मुँहचंग** पुं. (देश.) एक प्रकार का बाजा, मुरचंग।

**मुँह-चटौअल** स्त्री. (तद्.) 1. चुंबन, चूमाचाटी 2. बकवाद।

**मुँह-चुथौवल** स्त्री. (तद्.+देश.) 1. व्यर्थ की बकवाद 2. लड़ाई-झगड़े में एक दूसरे को मारने, काटने, नोचने आदि की क्रिया।

**मुँह-चोर** वि. (तद्.) 1. जो दूसरों से मुँह छिपाए 2. दूसरों के सामने जाने से बचने वाला, संकोच करने वाला।

**मुँह-छुआई** स्त्री. (देश.) मुँह छूने अर्थात्-ऊपरी तौर पर पूछने की रस्म अदा करना।

**मुँह-छुट** वि. (देश.) 1. जो कुछ मुँह में आए, सब बक देने वाला, मुँह फट 2. सबके सामने उद्दंडतापूर्ण बातें करने वाला।

**मुँह-जबानी** अव्य. (देश.) मौखिक, कंठस्थ करके।

**मुँह-जला** वि. (देश.) अशुभ तथा बुरी बातें कहने वाला।

**मुँह-जोर** वि. (तद्.+फा.) 1. बहुत बोलने वाला 2. लड़ाका, वाचाल 3. धृष्टतापूर्वक तथा बिना समझे-बूझे जो मुँह में आए, वह बक देने वाला, बकवादी 4. मनमानी करने वाला 5. उद्दंड जैसे मुँहजोर घोड़ा।

**मुँह-जोरी** स्त्री. (तद्.+फा.) 1. मुँहजोर होने की अवस्था या भाव 2. धृष्टता।

**मुँह-जोही** स्त्री. (तद्.) 1. मुख जोहने की क्रिया/भाव 2. आज्ञा की प्रतीक्षा में मुँह देखते रहना।

**मुँह-झोंसा** वि. (देश.) मुँहजला, एक प्रकार की गाली, अशुभ बातें कहने वाला।

**मुँह-तोड़** वि. (देश.) जो विरोधी को या शत्रु को पूरी तरह परास्त करते हुए नीचा दिखाने वाला हो जैसे- किसी को मुँह-तोड़ जवाब देना।

**मुँह-दिखरावनी** स्त्री. (देश.) 1. मुँह-दिखाई, दुलहिन का मुँह देखने की रस्म 2. वह धन, आभूषण आदि जो दुलहिन का मुँह देखकर उसे दिया जाए।

**मुँह-दिखलाई** स्त्री. (देश.) 1. मुँह दिखाने की क्रिया या भाव 2. मुँह दिखाने की रस्म या क्रिया, विवाह के पश्चात् ससुराल में वधू के मुँह देखने की क्रिया या रस्म।